जनसंख्या-वृद्धि एवं कन्या-भ्रूण-हत्या वेद-विरुद्ध

[1]Ved Sahani, [2]Rajkumar Sahani

University of Rajsthan, Jaipur, Rajsthan

Abstract

Vedas are the oldest epic of this world library, infact they are the base of knowlege. Swami Dayanand Sarsawati asked that the basic knowledge of every subjects are available in Vedas. Today humanity is suffering from the two major problems, population explosion and female foeticide. It is imagind that as 2050 India will be the first populated country of the world. Vedas explained that we can check popuation the controlled married life, if we will, avoid inter aourse duiny specilic peiod of mensruation.

Vedas wlays pay respecat for the female and provides the special power to save their dignity, existence etc. In this paper Vadic view on population explosion and female foeticide have been highlighted.

धरती अपनी पूछ रही है
ये आकाश भी पूछ रहा है
सभी दिशाओं से आवाज यही,
जन-संख्या-वृद्धि, अभिशाप तो
भ्रूण-हत्या महापाप है।

इस सामाजिक प्रदूषण के संत्रस्त जीवन से आदमी का खून क्यों नहीं खौलता है? जब तक मनुष्य वेदों की सूक्तियों की गहराई में नही उतरेगा, भौतिकता के विकास पर अग्रसर होने की अपेक्षा आनन्ददायी- पथ पर कदम-दर-कदम चलने लगेगा तभी पाप, अभिशाप, वरदान बन जाएंगे नैतिकता धर्म ध्वज बन लहराएगा।

इस तथ्य को सर्वमान्यता प्राप्त है कि वेद विश्व के पुस्तकालय में प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। ये सार्वकालिक एवं सर्वदा-नवीन है। सृष्टि के आदि में मानव के मार्ग-दर्शन और कल्याण के लिए प्रभु ने जो ज्ञान का प्रकाश दिया उसी का नाम है "वेद"। यह ज्ञान वह प्रकाश है जो मनुष्य के मन और मस्तिष्क का अंधकार समाप्त कर सत्य की राह दिखाता है। मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक ६ में कहा गया है, "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" अर्थात् वेद ही ज्ञान का मूलाधार है। एक अन्य स्थान पर मनु महाराज कहते है, "सर्वज्ञानमयोहि सः" अर्थात् वेद सब सत्य विद्याओं की अक्षय निधि है।

भारतीय मूर्धन्य विद्वानों ने तो वेदों को माना ही नहीं, जाना भी है परन्तु मेक्समूलर जैसे विदेशी विद्वानों ने वेदों का पश्चिमी दृष्टि से दिग्दर्शन किया और लिखा है कि "वेद गडरियों के गीत है" इसी लक्ष्य और उद्देश्य का उल्लेख खुले शब्दों में मोनियर विलियम्स ने भी किया था-

Colonel Borden explicity mentions in his will dated (August 15,1811) that the special object of his munificent bequest was to promote the translation of the Scriptures into Sanskrit, so as 'to enable his countrymen to proceed in the conversion of the natives of India to time the Christion Religion.

Monier Williams

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सिद्ध किया कि वेद ज्ञान-विज्ञान के भण्डार ही नहीं सभी सत्य विद्याओं का मूल भी उनमें विद्यमान है। आज मानव जाति अनगिनत समस्याओं से जूझ रहा है जिनका मूल कारण है जनसंख्या विस्फोट और कन्या-भ्रूण-हत्या। जनसंख्या की दृष्टि से भले ही विश्व में आज भारत का स्थान द्वितीय है परन्तु जनसंख्या विशेषज्ञों का अनुमान है कि सन् २०५० में यह स्थिति उलट जाएगी तथा भारत की जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक होगी।

	सन् २००३		सन् २००५	
देश	जनसंख्या (मिलीयन में)	वृद्धि दर वार्षिक	देश	जनसंख्या मिलीयन में
चीन	१२८९	०.६%	भारत	१६२८
भारत	१०६९	१.५%	चीन	१३९४

इन दोनों समस्याओं के सम्बन्ध में वेद-वेदांग व आर्य ग्रंथों में समाविष्ट ऋचाओं व श्लोको का ***अभिज्ञान*** कर इनका उपरोक्त समस्याओं से ***तादाम्य*** कर आलोचनात्मक दृष्टि से अनुसंधान ही इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

वैदिक धर्म ने मानव के ***व्यक्तित्व*** के लिए वर्ण और आश्रम को ही मुख्य आधार माना है। वैदिक सिद्धान्त स्पष्ट रुप से प्रतिपादित

Vijnana Bharati

करते है कि मानव की औसत आयु १०० वर्ष मानकर, जीवनकाल को चार बराबर भागो में बांट दिया गया है-ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थश्रम, और सन्यासाश्रम। इन चारों आश्रमों में से केवल दूसरे आश्रम में ही उत्तम और बलवान संतान उत्पन्न करने के आदेश हैं। ***ऋतुकालभिगामी स्यात् स्वदारनिरतस्सदो***- मनुस्मृति अ०३, श्लोक ४५ में आदेश दिया है कि सदा पुरुष ऋतुकाल में स्त्री का समागम करे, अपने स्त्री के बिना दूसरी स्त्री का सर्वदा त्याग रखे। हमारा स्वर्णिम इतिहास इस तथ्य का द्योतक है कि वैदिक काल में भी परिवार नियोजन का विवाहित जीवन में उत्कृष्ट स्थान था। याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी का आदर्श देखिये कि उनके कोई सन्तान नहीं थी। भगवान राम और सीता के दो जुड़वे पुत्र- लव व कुश थे। भगवान कृष्ण का केवल एक ही पुत्र था प्रद्युम्न। अस्सी-अस्सी वर्ष की ऋषिकाएँ भी ब्रह्मचर्य जीवन को सर्वोत्तम मानती थीं। वेदों का भी आदेश यहीं है कि संतान कम से कम होनी चाहिये। निम्न मत्रांश इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं-

१- बहुप्रजा निर्ऋतिमाविवेश- स्पष्ट है कि सन्तान अधिक नहीं होनी चाहिये।[१]

२- सना अत्र युवतयः सयोनीरेकम गर्भन्दधिरे सप्तवाणीः अर्थात् एक सन्तान का होना ही आदर्श है जिससे परिवार सुखी रह सकता है।[२]

३- मनु महाराज ने भी सत्य ही कहा कि केवल प्रथम् सन्तान ही 'धर्मज' होती है अन्य सभी 'कामज' अर्थात् कामुकता की गुलाम होती है।

''स एव धर्मजः पुत्रः कागजानितरान्विदुः।।[३]

१. सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति।[४]

यहां "पुत्रान्" शब्द का उपयोग किया गया है जो एकवचन है अतः यह एक ही संतान उत्पन्न करने का संकेत है और आधुनिक विज्ञान इस तथ्य को प्रभावशाली ढ़ंग से पुष्ट करता है कि संतान तब ही बलवान होगी जब कम होगी। इसी प्रकार से अथर्ववेद के काण्ड ३ सूक्त २३ में स्थान-स्थान पर कहां गया है,

२. ''वीरः पुत्रः आजायताम्''-वीर कुलशोधक बालक उत्पन्न हो।[५]

३. '' पुमांसम् पुत्रम् जनय''[६] अर्थात् रक्षा करने वाली वीर संतान उत्पन्न हो। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि संतान वीर कब होगी? कुलशोधक कब होगी? इन सबका वैज्ञानिक उत्तर है तब, जब संतान कम होगी।

इसी प्रकार से वेदों में जहां-जहां सन्तानोत्पति का प्रसंग आता है वहां-वहां अधिकांश एकवचन का ही प्रयोग किया गया है।

" पुत्रः" शब्द का यत्र-तत्र प्रयोग दिखाई देता है, "पुत्रः" बहुवचन का प्रयोग नगण्य है। इसी तथ्य की पुष्टि हेतु कुछ मंत्रों में आये हुए ऐसे ही शब्दों को उद्धत किया जाता है।

१. "पुत्रस्ते"- ३-२३-२	अथर्ववेद
२. "कुमारः"- ५-७८-९	ऋग्वेद
३. "पुत्रम् जनय"- ३-२३-३	अथर्ववेद
४. "पुत्रम् विन्दस्व"- ३-२३-४	अथर्ववेद
५. विन्दस्व त्वं पुत्र- ३-२३-५	अथर्ववेद
६. पुत्रविद्याय- ३-२३-६	अथर्ववेद
७. कुमारो अधि मातरि- ५-७८-९	ऋग्वेद

अतः उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि वेद एक ही सन्तान उत्पन्न करने की बात कहते है जो बलवान पराक्रमी श्रीमान और पुरुषार्थी हो।

पुत्री-जन्म और वेद

कुछ आलचकों का कथन है कि वेदों में सर्वत्र पुत्र की प्राप्ति की ही इच्छा की गई है, पुत्री की नहीं। वस्तुतः यह सही नही है क्योंकि आलोचक इस तथ्य को भूल जाते है कि वैदिक कोष "निघण्टु" में अपत्य वाची १५ शब्द हैं, हम सब जानते है कि "अपत्य का अर्थ संतान होना है जिससे पुत्र और पुत्री दोनों सम्मिलित है और वे तुक्। तोकम्। तनयः। तोक्म्। तक्म्। शेषः। अप्नस् गयः। जोः। अपत्यम। यहुः। सूनुः। नपात्। प्रजाः। बीजम्।। इति पंचदश अपत्यनामानि।

निःसन्देह उपर्युक्त शब्दों से जहां-जहां वेदों में संतान -प्राप्ति की गई है, वह पुत्र और पुत्री दोनों के लिए है। इस तथ्य को भी नकारा नही जा सकता कि वेदों में संतान की प्राप्ति की प्रार्थनाएं सर्वाधिक "प्रजा" शब्द से ही की गई है, उदाहरणार्थ-

(१) सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा। -ऋ०१-२३-२४

(२) ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोस्योति सचेमहि।
- १.१३६.६

(३) प्र जायेमहि रूद्र प्रजाभिः - ऋग्वेद २-३३

(४) आप्यायमानाः प्रजया धनेन - ऋग्वेद १०-१८-२

(५) इह प्रियं प्रजया ते समृध्यताम् - ऋग्वेद १०-८५-२७

(६) आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिः - ऋग्वेद १०-८५-४३

(७) मा हास्महि प्रजया मा तनूभिः - ऋग्वेद १०-१२८-५

(८) समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया - यजु० ३-१९

Vijnana Bharati

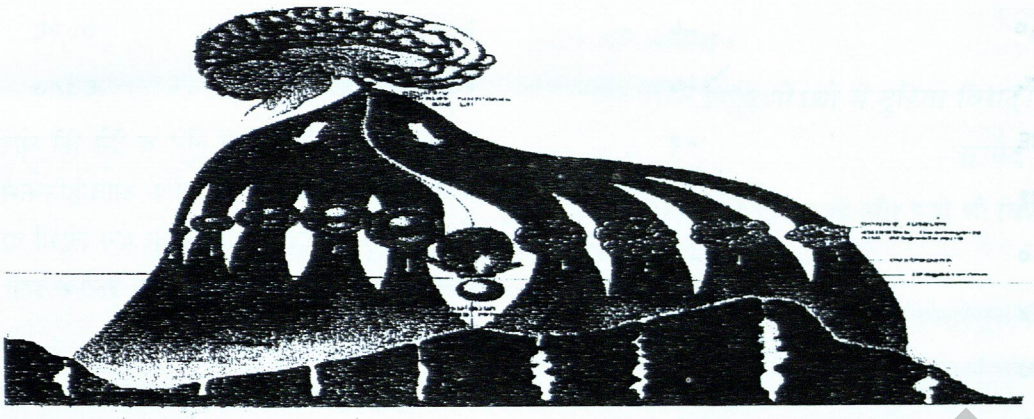

(९) सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम् -यजु० ३-३७

(१०) प्रजया च बहुम् कृधि - यजु० १७-५०

(११) अग्निः प्रजां बहुलां मे करोतु - यजु० १९-४८

(१२) सूर्यामिव परिधत्तां प्रजया - अथर्व० १४-१-५३

(१३) इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु - अथर्व० १४-१-५४

(१४) इह प्रजां जनय पत्ये अस्मै - अथर्व० १४-२-३१

ऋतुदान का काल वैदिक मान्यतानुसार (सर्वश्रेष्ठ परिवार नियोजन विधि)

स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल का समय (मनुस्मृति ३.४६) के अनुसार केवल १६ रात्रि का माना है, उनमें से रजोदर्शन के दिन की रात्रि सहित चार रात्रियां निन्दित है। इसी प्रकार रजोदर्शन के दिन से ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि भी ऋतुदान के लिए निन्दित है। १६ रात्रियों में से १० रात्रियां ऋतुदान के लिए श्रेष्ठ बताई है। इन १० रात्रियों के बीच यदि कोई पर्व अर्थात् अमावस्या, पूर्णमासी, अष्टमी और चतुर्दशी का दिन आये तो उस रात्रि में भी ऋतुदान न करें, ऐसा स्पष्ट निर्देश १-१२८ और ३-४५ में हैं।

इन चार दिनों में समागम निषेध क्यों?

क्योंकि इन दिनों में विशेष यज्ञ करने धार्मिक कर्म व वेदादि ग्रंथों के स्वाध्याय का विधान किया है। (४-२५/६-८/३-३) अजितेन्द्रियावस्था में इन धार्मिक कर्मों के फल की सिद्धि नहीं होती। (मनु० २-७२) के इस आदेश की पुष्टि आचार्य कौटिल्य ने भी कारणपूर्वक आवश्यक बतलाया है। इसको गृहस्थ का धर्म विधान माना है। इसका पालन न करने पर उसके लिए दण्ड व्यवस्था भी की है। (अर्थशास्त्र प्रक० ६४-४)। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी उक्त निन्दित रात्रियों में समागम नहीं करते है वे भी ब्रह्मचारी ही होते है (३.५०)। यदि आज भी हम उक्त निर्देश का अनुपालन करते है तो परिवार नियोजन की इस वैज्ञानिक विधि के अतिरिक्त कोई अन्य विधि उत्तम नहीं हो सकती।

वैज्ञानिक सिद्धान्त भी उक्त तथ्यों की पुष्टि करते है जो निम्न चित्र से स्पष्ट है-

Fertilization केवल ११ वें से १५ वें दिन तक ही संभव है और ovulation १४ वें दिन होता है हमारे शास्त्रों ने ११ वीं और १३ वीं रात्रि निन्दित की है। क्योंकि egg का जीवन काल केवल १२ से २४ घंटे का ही है। इसलिए निषेचन की संभावना सीमित हो जाती है।

"आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् "- यजु०२२/२२

यहां इच्छा व्यक्त की गयी है कि हमारे राष्ट्र में जहां विजयशील, सभ्य, वीर युवक पैदा हों, साथ ही विदुषी सुभग नारियों के उत्पन्न होने की भी प्रार्थना है।

कन्या- भ्रूण हत्या

आज देश भर से लगभग ५,००,००० सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित स्थान अर्थात् गर्भाशय में ही भ्रूण नष्ट कर दिया जाता है तथा कन्याओं को तो डाक्टरों के क्रूर हाथों द्वारा भ्रूण हत्या का शिकार बना दिया जाता है। इन बच्चियों को जीवन का प्रकाश देखने से वंचित कर दिया जाता है। जो निम्न लिखित तालिका से स्पष्ट है-

गिरता हुआ लिंग - अनुपात

१९०१ से २००१ तक

वर्ष	एक हजार पुरूषों में स्त्रियों की संख्या	कितने पाँइन्ट गिरा या बढ़ा
१९०१	९७२	-
१९११	९६४	-८
१९२१	९५५	-९

Vijnana Bharati

१९३१	९५०	-५
१९४१	९४५	-५
१९५१	९४६	+१
१९६१	९४१	-५
१९७१	९३०	-११
१९८१	९३४	+४
१९९१	९२७	-७
२००१	९३३	+६

मगर ऐसा क्यों? इसलिए कि हमारा समाज लड़के को मूल्यवान और लड़की को उत्तरदायित्व का रूप समझता है। यही जन्मदात्री का कोमल हृदय उसकी लड़की को होने वाले दुःख तकलीफों को कल्पना स्वरुप भी नहीं देख सकती जैसे दहेज प्रथा, घरेलू-कलह, लड़की का ससुराल पक्ष में शक्तिहीन होना, आदि आदि। वेदों ने लड़का-लड़की दोनो को समान अधिकार दिये हैं, लड़कियों में कुछ निहित शक्तियां है जिनका उपयोग वे कर सकती है और समाज के स्वार्थी ठेकेदारों द्वारा फैलाएं हुए भ्रूण-हत्या के जिम्मेदार हैं। वेद व अन्य आर्ष ग्रन्थों से अनेकों ऐसी ऋचाएँ व श्लोक उद्धत किये जा सकतें है जो समाज को ऐसी दिशा देते है जिनसे लड़कियों पर आने वाले सभी संकट दूर हो जाएं।

दहेज प्रथा धर्म शास्त्र विरूद्ध

कन्या भ्रूण हत्या के पीछे मुख्य कारण है अजगर रूपी दहेज प्रथा। आर्यावर्त्त में स्मरणातीत समय से ही एक अभिशाप रूप में मुख्य कुरीति चली आ रही है जिसके कारण पूर्व में कन्याओं को पैदा होते ही मार दिया जाता था परन्तु पिछले २० वर्षो से विज्ञान की प्रगति ने इस समस्या को और गहरा दिया है क्योंकि अनेक विधियों से भ्रूण का लिंग परीक्षण हो जाता है और उत्पन्न होने वाली कन्या जीवन के प्रकाश से वंचित हो जाती है; आज भी भारत में हजारों नारियां दहेज के कारण अकाल काल को प्राप्त हो जाती हो रही है जो निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट है:-

दहेजात्मक हत्याऐं

वर्ष	मृत्यु संख्या
२००१	६८५१
२००२	६८२२
२००३	६२०८
२००४	७०२६
२००५	६७८७

हमारे धर्मशास्त्र भी दहेज लेने व देने की घोर निन्दा करते है। दहेज को मनु महाराज ने अधि-आवाहनिकम की संज्ञा दी है और कहा है कि दहेज के इच्छुक धन लोभी दानव पापी है तथा अधमगति को प्राप्त करते है। निम्न श्लोक इसी आशय की पुष्टि करता है-

स्त्री धनानि तु ये मोहादुपजीवन्ति बान्धवाः।
नारी यानानि वस्त्रं वा ते पापा यान्त्यधोगतिम्।।

यद्यपि हमारे देश में दहेज विरोधी कानून बने हुए हैं तब भी कानून का प्रभाव तो नगण्य ही है अतः आवश्यक है देशवासियों की मानसिकता को बदलना और वैचारिक क्रान्ति को कार्यान्वित करना इसकी अत्याधिक आवश्यकता है।

जब वेद और अन्य धर्म ग्रंथ बालक- बालिका दोनों को एक समान मानते हैं तो बालिका हत्या व कन्या-भ्रूण हत्या क्यों? इसके अनेक कारण हैं। धर्म के ठेकेदारों (पण्डों) द्वारा फैलाये गए अनेक भ्रम, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा के कारण कन्याओं का दुःखी होकर जलकर या फांसी लगाकर मरना आदि।

सामाजिक भ्रम

एकक्षणा भवेद् गौरी द्विक्षणेयन्तु रोहिणी।
त्रिक्षणा सा भवेत्कन्यां ह्यत ऊर्ध्व रजस्वला।।
माता पिता तथा भ्राता मातुलो भगिनी स्वका।
सर्वे ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्।।

(यह सद्योनिर्मित ब्रह्मपुराण का वचन है)

जितने समय से परमाणु एक पलट खावे उतने समय को क्षण कहते है, जब कन्या जन्में तब एक क्षण में गौरी, दूसरें में रोहिणी, तीसरे में कन्या और चौथे में रजस्वला हो जाती है। उस रजस्वला को देख के उसके माता पिता भाई मामा और बहिन सब नरक को जाते है। यह कैसे संभव है सहस्त्र क्षण जन्म समय ही में बीत जाते है तो विवाह कैसे हो सकता है। शायद इसी कारण कन्या-भ्रूण-हत्या को प्रोत्साहित किया जाता है। महर्षि स्वामी दयानंद इसके प्रबल विरोधी रहे।

घरेलू हिंसा वेद शास्त्र विरुद्ध

(१) एषा ते कुलपा राजन् तामु ते परि दद्यासि।

Vijnana Bharati

अर्थात् पिता अपनी कन्या को ऐसे उत्तम पुरुष को दान करे जहां वह कुलपालक बने।

(२) "विराड् ज्योतिरधारयत् स्वराड् ज्योतिरधारयत्"

– य० वेद १३-२४

इस मंत्राश का भावार्थ करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते है, जो पुरुष स्त्रियों का और जो स्त्री पुरुषों का सत्कार करती है उनके कुल में सब सुख निवास करते है।

(३) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।

अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है वहां आनन्द ही आनन्द है।

और

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा।।

जिस घर में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है और जिस घर में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता से भरी रहती है, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

(४) यच्चित्रमप्न उषसो वहन्ती जानाय शशमानाय भद्रम्।

– ऋ० १-११३-२०

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार जो पुरुष स्त्री का और जो स्त्री पुरुष का सत्कार करती है उनके कुल में सब सुख निवास करते है।

(५) घ्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा।– यजु.१३-१६

अर्थात् राजा के समान रानी भी पढ़ी होनी चाहिए और राजा-रानी दोनों परस्पर पतिव्रता-स्त्रीव्रता हो के न्याय से पालन करें।

(६) स्त्री-या पुरुष के (extramarital) सम्बन्ध स्वदारनिरतः सदा।

अर्थात् पुरुष अपनी स्त्री के बिना दूसरी का सर्वदा त्याग रखें और ऐसे ही स्त्री भी अपने विवाहित पुरुष को छोड़कर अन्य पुरुषों से सदैव पृथक रहें।

उपरोक्त मंत्रों/श्लोकों से सुस्पष्ट है कि हमारे वेद-शास्त्र घरेलू कलह, हिंसा की अनुमति नहीं देते।

कन्या की कामना-

(१) मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।

–ऋग्वेद १०-१५९-३

मेरा पुत्र शत्रुहन्ता हों और पुत्री भी विशेष तेजस्विनी हो।

(२) पुत्रिणा ता कुमारिणा विश्वमायर्व्यश्नुतः।

यज्ञ करने वाले पति-पत्नी पुरुषों और कुमारियों वाले होते है।

(३) अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि। आवक्षत् कन्यासु न ।।१०।। – ऋग्वेद ९-६७-१०

प्रति प्रहर हमारी रक्षा करने वाला पूषा परमेश्वर हमें कन्याओं का भागी बनायें, अर्थात् कन्याएँ प्रदान करें। इस मंत्र की व्याख्या सायण ने भी ऐसी ही की है कि पूषा हमें कन्याएं प्रदान करें पर उसे वे कन्याएं पत्नी-रुप में अभिप्रेत प्रतीत होती है, न कि पुत्री रूप में।

कन्यासु कमनीयासु अभिमतासु स्त्रीषु नः अस्मान्।
अभिक्षत् अभिजतु, अस्मान् कन्याः प्रयच्छतु इत्यर्थः।।

यहाँ पर "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी" की ही उक्ति चरितार्थ होती है।

भ्रूण हत्या वेद विरुद्ध

अथर्ववेद के काण्ड ५ के सूक्त २५ को यदि "गर्भ संरक्षण" सूक्त कहा जाये तो अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि इस सूक्त में गर्भ को सुरक्षित रखने और दसवें महीने में उत्तम सन्तान करने पर बल दिया गया है *'दशमे मासि सूतवे आ धेहि।'*(अथर्व.५.२५-१०) अर्थात् भ्रूण हत्या (पुत्र/ कन्या) वेद विरुद्ध है गर्भ की सुरक्षितता के लिये परमेश्वर तथा अन्यान्य देवताओं की प्रार्थना इस सूक्त में की गई है और कहा गया है कि गर्भ की जितनी सुरक्षा हो सके उतनी करनी चाहिये। निम्न कुछ उदाहरण उपरोक्त कथन की पुष्टि करते है-

(१) एवा दधामि ते गर्भम् तस्मै त्वामवसे हुवे - २

हे पति! मै तेरा गर्भ धारण करती हूँ और इसकी रक्षा करने को मैं तुझे बुलाती हूँ।

(२) ते गर्भम् आ धत्ताम् -३

तेरे गर्भ के बालक को अच्छे प्रकार पुष्ट करें।

(३) ते गर्भम् दधातु -४

Vijana Bharati

तेरे गर्भ को पुष्ट करें।

(४) प्रजापतिः ते गर्भम् आ सिञ्चतु दधातु -५

परमपिता परमात्मा तेरे गर्भ को सींचे और पुष्ट करें।

नारी सम्मान

स्वामी दयानंद नारी सम्मान के प्रबल पक्षपाती थे कि नारियों को घर में और समाज में अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

महर्षि यास्क निरुक्त में कन्या की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखते है- "कमनीया भवति। कवेयं नेत येति। कमने नानीयत इतिवा। कनतेर्वास्यात् कान्ति कर्मणः'। अर्थात् कन्या कामना, चाहना, विशेष प्रीति के योग्य है। कन्या घर का प्रकाश है। यह पिता कुल, पति कुल और समाज को सुयोग्य और सुसंस्कृत करती है। नारी सृष्टि की परम सौन्दर्यमयी श्रेष्ठ कृति है। सृजन के आदि से विश्व इस की गोद में क्रीड़ा करता आ रहा है। उसकी मधुमय मुस्कान में महा निर्माण के स्वप्न है। महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कितना सत्य कहा था –" नारी एक पूंजी है, अमूल्य रत्न है, सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम कृति है"। "इयं वेदिः भुवनस्य नाभिः" यह परिवार की मूलाधार है। पूरे समाज तंत्र की व्यवस्था - पृष्ठ-रज्जु-सम है। इसके भ्रू भंग में विनाश की प्रलयंकारी घटाएं ही होंगी। अतः समय रहते इस मुँह बाए खड़ी समस्या का समाधान सोचना अति आवश्यक है। इसी समस्या का दुष्परिणाम ही भविष्य असुरक्षा के कगार पर खड़ा है। यह समस्या राष्ट्ररूपी वृक्ष की जड़ें खोखली कर रही है।

वर्तमान युग में मानव के दृष्टिकोण में धर्म, अहिंसा, त्याग की भावना मृत-प्राय हो चुकी है। इसका मुख्य कारण आध्यात्मिक चेतना की जगह तकनीकी या वैज्ञानिक ज्ञान का दुरुपयोग है। दूरदर्शन का इतना प्रभुत्व है जो बच्चे से लेकर बूढ़े तक के संस्कारों को दूषित कर चुका है। आज इतना भ्रष्टाचार, अनाचार, अपहरण पाश्चात्य सभ्यता का रोचक चस्का युवा पीढ़ी को विलासिता की ओर धकेल रहा है। भारतीय आदर्श, संस्कृति धूमिल हो चुकी है। इसी धूमिल कालिमा का ही दुष्परिणाम जनसंख्या वृद्धि और कन्या-भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियाँ है जो यत्र तत्र सर्वत्र मंडरा रही है।

भारत भूमि ऋषि मुनियों की भूमि है यह हमारी जन्मभूमि, कर्म भूमि और धर्म भूमि है। इस संक्रमण काल में अपने निजी स्वार्थ से हट कर सोचने की आवश्यकता है। हमें आर्य सभ्यता, वैदिक संस्कृति और मानव मूल्य स्थिर करने होंगे। 'तमसो मा ज्योर्तिगमय' का आह्वान ही हमारा प्रेरक होगा। हम राष्ट्रीयता की पुनीत गंगा को अन्त में -

वेदों से भारत उदित हुआ, वेदों से पुनः स्वस्थ होगा,
फिर यही वेदना व्यथा मुक्त, निर्द्वन्द्व, पदार्थ-मुक्त होगा।
आओ फिर पुनः पुरातन से, नूतन का परिष्कार कर लें,
वैदिक विज्ञान प्रणाली से, इस भू का सकल भार हर लें।।

सन्दर्भ

१. मनुस्मृति, प्रो० सुरेन्द्र कुमार आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित, मार्च १९९५

२. वैदिक नारी, डॉ० रामनाथ वेदालंकार समर्पण शोध संस्थान, ब्किरमाब्द २०४२, नई दिल्ली।

३. अथर्ववेद संहिता, भाषा-भाष्य भाग-१ विश्वनाथ प्रो. वैदिक साहित्य गुरूकुल कांगड़ी

४. संक्षिप्त सत्यार्थ प्रकाश, प्रकाशित, सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी, वानप्रस्थ मण्डल, ज्वालापुर (हरिद्वार) एक वैशाख २०४२ वि.

५. संस्कार विधि, स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (पानीपत) द्वारा प्रकाशित वि०सं० २०३१ चैत्र

६. वेदों में पर्यावरण विज्ञान, प्रो० डॉ०चन्द्रशेखकर लोखडे, श्री घूड़मल प्रहलाद कुमार धमार्थ ट्रस्ट, हिण्डौन सिटी, राजस्थान द्वारा प्रकाशित, सं० २०६२

७. ऋग्वेद प्रथम मण्डल, महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सं०२०४८

८. वही २,३,४ मण्डल

९. वही ९,१० मण्डल

१०.अथर्ववेद काण्ड ४ से ६, पं.श्री पाद् दामोदर सातवलेकर कृत. स्वाध्याय मण्डल पारडी सं०२०१५

११.अथर्ववेद भाषा-भाष्य - श्री खेमकरण दास त्रिवेदी कृत, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वि.२०३०

१२.वही - मण्डल ९, १०

१३. Education in Human Sexulity by Dhun Panthaki- FPA India. Publication 2005

१४. Human devcolopment. published by Exeter books. New York.

१५.वेद कालीन नारी- डॉ० पी इन्दिरा, विश्व वेद विज्ञान सत्रम् बैंगलोर- अगस्त २००४

१६. Religion. spirituality and social action. New Agenda for Humanity by- Swami Agnivesh 2001 pp 145

१७. यजुर्वेद भाषा भाष्ट महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रकाशन।

Vijana Bharati